UGC CARE LISTED
ISSN No.2394-5990

संशोधक

वर्ष : ९२ मार्च २०२४ पुरवणी विशेषांक ११

प्रकाशक : इतिहासाचार्य वि.का.राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे

PRINCIPAL
T.S.S's.Smt. V.U.Patil Arts &
Late Dr.B.S.Desale Science College
Sakri, Tal.Sakri, Dist.Dhule

UGC CARE LISTED
ISSN No. 2394-5990

इतिहासाचार्य वि. का. राजवाडे मंडळ, धुळे
या संस्थेचे त्रैमासिक

।। संशोधक ।।

पुरवणी अंक ११ – मार्च २०२४ (त्रैमासिक)

- शके १९४५
- वर्ष : ९२
- पुरवणी अंक : ११

संपादक मंडळ

- प्राचार्य डॉ. सर्जेराव भामरे
- प्राचार्य डॉ. अनिल माणिक बैसाणे
- प्रा. डॉ. मृदुला वर्मा
- प्रा. श्रीपाद नांदेडकर

अतिथी संपादक

- डॉ. जयश्री एम. गावित
- श्री. संतोष एकनाथ धनेधर
- डॉ. विशाल एस. करपे

* प्रकाशक *

श्री. संजय मुंदडा

कार्याध्यक्ष, इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे ४२४००१
दूरध्वनी (०२५६२) २३३८४८, ९४२२२८९४७१, ९४०४५७७०२०
Email ID : rajwademandaldhule1@gmail.com
rajwademandaldhule2@gmail.com

कार्यालयीन वेळ
सकाळी ९.३० ते १.००, सायंकाळी ४.३० ते ८.०० (रविवारी सुट्टी)

अंक मूल्य रु. १००/–
वार्षिक वर्गणी (फक्त अंक) रु. ५००/–, लेख सदस्यता वर्गणी : रु. २५००/–

विशेष सूचना : संशोधक त्रैमासिकाची वर्गणी चेक/ड्राफ्टने 'संशोधक त्रैमासिक राजवाडे मंडळ, धुळे' या नावाने पाठवावी.

अक्षरजुळणी : सौ. सीमा शिंत्रे, पुणे.

टीप : या नियतकालिकेतील लेखकांच्या विचारांशी मंडळ व शासन सहमत असेलच असे नाही.

Sakri (Dhule)

PRINCIPAL
T.S.S's.Smt. U.Patil Arts &
Late Dr.B.S.Desale Science College
Sakri, Tal.Sakri, Dist.Dhule

४२. आदिवासी कोकणा/कोकणी/कुंकणा जनजाति का विवाह : कल और आज
- सहा. प्रा. डॉ. गोकुलदास सोनु ठाकरे ---------- १७२

४३. आदिवासी जीवन संघर्ष की गाथा (धार और गायब होता देश के संदर्भ में)
- डॉ मुकेश वसावा ---------- १७६

४४. ग्रामिण और आदिवासी महिलाओंका सशक्तिकरण
- डॉ. प्रा. करुणा दत्तात्रय अहिरे ---------- १८१

४५. आदिवासी लोककला और उसकी वैश्विकता: एक सांगीतिक दृष्टी
- प्रा.अनिता शर्मा ---------- १८३

४६. ग्रामीण विकास की गांधीवादी अवधारणा
- डॉ. वसीम मक्राणी ---------- १८७

४७. जनजातीय संस्कृती मे कला का महत्व एवं स्थान : एक अवलोकन
- प्रा.डॉ.वर्षा एस.आगरकर ---------- १९१

४८. 'जोहार आदिवासी संग्रहालय' का एक अध्ययन
- छोट्या (छोटू) एन मावची (शोधछात्र) ---------- १९४

४९. जनजातीय विकास के विविध उपागम एवं संवैधनिक प्रयासों का समाज वैज्ञानिक अध्ययन
- डॉ. सुनील पाटिल ---------- १९९

५०. कृषि संकट और किसानों की आत्महत्या
- डॉ शालिनी गुप्ता ---------- २०३

५१. आदिवासी मावची बोली के लोकगीतों में होली त्योहार का दर्शन
– प्रा डॉ शिवाजी रामजी राठोड ---------- २०८

▲▲▲

PRINCIPAL
T.S.S's.Smt.V.U.Patil Arts &
Late Dr.B.S.Desale Science College
Sakri, Tal.Sakri, Dist.Dhule

संशोधक

ISSN No. 2394-5990

ग्रामिण और आदिवासी महिलाओंका सशक्तिकरण

डॉ. प्रा. करुणा दत्तात्रय अहिरे
श्रीमत. विमलबाई उत्तमराव पाटील कला एवं
कै. डॉ. बी. एस देसले विज्ञान महाविद्यालय
साक्री जिला धुलियॉ
Email: ahirekaruna1975@gmail.com, Mob. 8308142705

महिला सशक्तिकरण एक व्यापक अवधारणा है। जिसमे अधिकारों तथा शक्तियों का स्वभाविक रुप से समावेश है। यह एक ऐसी मानसिक अवस्था है जो कुछ विशेष आंतरिक कुशलताओं और शैक्षणिक, आर्थिक, सामाजिक राजनीतिक परिस्थितियों पर निर्भर करती है। महिला सशक्तिकरण एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया है, जिसमें महिलाओं के लिए सर्व संप्पन्न और विकसित होने हेतु असीम संभावनाओं के व्दार खुले हो और नये विकल्प तैयार हो। शिक्षा और ज्ञान यह ऐसे विकल्प है की महीला अपने जीवन को स्वाभीमानी, आत्मविश्वासू, करुणामयी, साहसी निडर बन जाती है। इसलिए ज्ञान चेतना को जन्म देता है और महिला सशक्तिकरण तभी संवभ है, जबकि महिलाओं में अपने अधिकारों के प्रति चेतना और स्वाभिमान की भावना प्राप्त हो। शिक्षा से नारी को शोषण से मुक्ति मिलती है।

ग्रामीण और आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए तकनीकी शिक्षा पर भी बल देना अनिवार्य है। तकनीकी शिक्षा मानव संसाधन को अधिक दक्ष एवं गुणात्मक रुप से अधिक सक्षमबनाकर समुची अर्थव्यवस्था को ग्राहय बनाती है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 46 के अनुसार राज्य प्रशासन की यह जिम्मेदारी बताई गई है कि वह ग्रामीण व आदिवासीयों की शिक्षा संबधित गतिविधियों मे तेजी से विस्तार करे। इसलिए राज्यशासन का आदिम जाति कल्याण विभाग आदिवासी क्षेत्रों में शैक्षणिक गतिविधियों का संचालन कर रही है। छत्तीसगढ आदिवासी क्षेत्रों में दस विशेष औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना की गई। तकनीकी शिक्षा से संयंराजगार के सर्वाधिक अवसर प्राप्त होते है और इनसे आर्थिक सशक्तिकरण को काफी बढ़वा भी मिलता है। जिससे ग्रामीण और आदिवासी महिलाओं की आर्थिक विपन्नता दूर होगी।

शिक्षा न केवल विकास का द्योतक है, वह समाज में शिक्षित होने से सामाजिक जड़ताओं से मुक्ति प्राप्त करने की कोशिशे बढ़ती है। समाज परिपक्व होता है जिसके परिणाम स्वरुप अस्पृश्यता, वैषम्य, निराशा, हीनता तथा दरिद्रता जैसी सामाजिक विसंगतियाँ भी दूर होती है विसंगतिरहीत समाज की स्थापना यह देश कि सर्वांगीण विकास के लिए महिलाओं का शिक्षित होना बहुत आवश्यक है। क्योंकि समाज - निर्माण महिलाओं की दोहरी भूमिका को नकारा नही जा सकता।

ग्रामिण और आदिवासी महिला अशिक्षा के कारण वे अपने अधिकारों से वंचित रहेगी। इसलिए प्रशासन के व्दारा उन्हे अधिक सशक्त बनालि और शिक्षा को अधिक विस्तृत व अधिक सुदृढ करने के लिए अनेकानेक योजनाएँ निरंतर व सतत रुप से संचालित है जिसमें कंप्यूटर योजना, दत्तक पुत्री योजना, जवाहर आदिम जाति उत्कर्ष योजना। ग्रामीण और आदिवासी महिलाओं के लिए उच्चशिक्षा के विशेष प्रबधान है।गाँव से शहर तक उपन्यास में मोहीनी नामक पात्र जीसे मोहीनी को बहन कहा जाता है, उनके प्रयास से गाँव में छोटे-छोटे उद्योग शुरु किए जाते है गाँव में पहले चलनेवाले गुड बनाने और तेल के निकालने के उद्योग को और मजबूत बनाया और गाँब वालों को भी इन उद्योग के लिए प्रेरित किया।

स्थानीय फसलों के सहारे चलनेवाले की स्थापना पारस्पारिक सहकारिता के आधार पर की गई। देखते-देखते चीनी का एक बडा सरकारी मिल बन गया । कई विद्यालय-भवनों और विद्यालयों के साथ स्थानीय सडको तथा नल कुपों के निर्माण पर थी कार्य होने लगा। कृषि के नए रुप में विकास के साथ - साथ उद्योग-धंदो की बाढ आ गई। संपूर्ण क्षेत्र के कृषक और व्यापारी जाग उठे । इस उपन्यास में एक महिला के शिक्षित और रोजगार तथा उद्योग की जानकारी होने के कारण गाँव का विकास होता दिखाई देता है।

अल्मा कबूतरी मैत्रेयी पुष्पा व्दारा लिखित उपन्यास में आदिवासी समाज का चित्रण किया गया है। इस उपन्यास में सभ्य समाज के लोग किस प्रकार आदिवासी समाज के लोगों पर अन्याय और अत्याचार करते है, सभ्य और पुलिसवाले इन समाज को प्रताडित करते है यही नही उनपर तरह तरह के अन्याय करते है लेकिन उपन्यास की स्त्री पात्र आत्मा कई जगह पीडित होती है शोषित हुई फिर भी उसने हार नही मानी

Sakri (Dhule)
PRINCIPAL
T.S.S's.Smt.V.U.Patil Arts &
Late Dr.B.S.Desale Science College
Sakri, Tal.Sakri, Dist.Dhule

अपना संयम बनाए रखा। तभी जाकर वह विधान सभा में अपना स्थान बना पाई इस उपन्यास में आदिवासी अल्मा अपने अधिकारों के प्रति सजग है साथ ही लेखिका ने नारी को संयम शक्ति, उसकी सहनशीलता का चित्रण किया है। भारत गाँवो का ही देश है। आज अस्सी प्रतिशत परिवार ऐसे है जो गाँवों में रहते है। और वहाँ की ग्रामीण महिलाएँ शिक्षा, सभ्यता से कोंसो दूर है ।

ग्रामीण महिलाएँ अपने बच्चों को शिक्षा या पढाने के बजाय बचपन से ही काम कराने लग जाती है । छोटी उम्र में अधिक काम कराने व उचित पौष्टिक आहार न मिलने से बच्चों कां पूर्ण विकास नही हो पाता जैसे तैसे जीवन को एक बोझ की तरह होकर जैसे आये थे वैसे ही जिवन जीते चले जाते है । मानव जीवन की किंमत तथा सही उदिष्ट को वहॉ नही जान पाते । इसका मुख्य कारण ग्रामीण स्त्रीयों का शिक्षा का अभाव यहि ग्रामिण और आदिवासी महिला शिक्षित होगी, अपना कर्तव्य और अधिकार समझेंगी तो वह अपनी संतान को वैसा योग्य बनाकर देश की आवश्यकता को पूरा करंगी ।

ग्रामिण आदिवासी महिलायों में शिक्षा का अभाव होने के कारण उसमें पाकविज्ञान, शिशु-पालन, पारस्पारिक व्यवहार आदि का उचित ज्ञान न होणे से वह कितनी ही बार ससुराल से पति व अन्य सदस्यों व्दारा ठुकराई जाती है । यही नही कभी-कभी उसे पति व्दारा बच्चों से भी अलग किया जाता है । ऐसे में श्रम करना और अंधकारमय जीवन जीने के बजाय कोई पर्याय उसके सामने नही होता इसलिए ग्रामिण और आदिवासी महिलाओं में शिक्षा का बढ़ना अनिवार्य है । जिससे वह अपने अधिकार तथा वह खुद एक मानव प्राणी है, गुलाम नही यह समझ उसमे आ जायेंगी।

सारांश :

यहाँ स्पष्ट है महिला सशक्तिकरण एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया है जिसमे महिलाओं के लिए सर्व संपन्न और विकसित होने हेतु असीम संभावनाओं के व्दार खुले हो और नए विकल्प तैयार हो । हमारे भारतीय संविधान के अनुसार राज्य, प्रशासन की य जिम्मेदारी है की वह ग्रामीण व आदिवासीयों की शिशा संबंधित गतिविधियों में तेजी से विस्तार करें। और हमारा प्रशासन एवं अन्य सामाजिक संस्थाएं अनेकानेक योजनाऐ निंरतर रुप से संचालीत करनेका प्रयास कर रही है। जैसे आदिवासी मलिाओं के लिए उच्चशिक्षा तथा विषेश आरक्षण के तहेद विषेश प्रावधान देकर सामाजिक समता प्रस्थापित करने का महत्वपूर्ण काम कर रही है। हमारे आदिवासी भाई भारत के सपूत देशभक्त है । आजादी के आंदोलन में योगदान देनेवाले आदिम है।रामायण महाभारत से लेकर आधुनिक काल तक वे अपनी सांस्कृतिक रक्षा कर रहे है । इसलिए आज भि ग्रामिण और आदिवासी महिलाओंका सशक्तिकरण हर एक क्षेत्र में होना बहुतही महत्वपुर्ण है। ताकि उनका जीवन आत्मनिर्भय और सक्षम हो सके।

संदर्भ :

1. विरेंद्रनाथ मिश्र –गाँव से शहर तक
2. मैत्रेयी पुष्पा- आल्या कबूतरी
3. ममता गर्ग- जनजातिय महिला सशक्तिकरण
4. भारत सरकार - शिक्षा आयोग की रिपोर्ट
5. पी. आर. नायडू- भारत के आदिवासी

PRINCIPAL
T.S.S's.Smt.V.U.Patil Arts &
Late Dr.B.S.Desale Science College
Sakri, Tal.Sakri, Dist.Dhule